P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शिक्षा : एक अध्ययन

Education of Scheduled Caste Girls at Primary Level: A Study

Paper Submission: 04/06/2021, Date of Acceptance: 16/06/2021, Date of Publication: 24/06/2021

उत्कर्षिणी तिवारी
छात्रा,
समाजशास्त्र विभाग,
बनस्थली विद्यापीठ,
बनस्थली, राजस्थान, भारत

सारांश

एक देश का विकास तब तक सम्भव नहीं हो सकता है, जब तक उस देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित न हो चाहे वह पुरुष हो व महिला हो। दोनों का देश के विकास की राह में अभिन्न योगदान रहता है। लेकिन कुछ कारणों से आज भी देश में महिलाओं की शिक्षा पूर्णतया सम्पन्न नहीं हो पा रही है। अतः प्रस्तुत प्रपत्र प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं की शैक्षिक प्रस्थिति, विशेषकर अनुसूचित जाति के संदर्भ में किए गये अध्ययन पर आधारित है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बालिकाएँ अपनी शिक्षा को पूरी नहीं कर पाती हैं। रुढ़िवादी धारणाएँ गरीबी, विद्यालयों का गाँव में न होना, सड़कें न होना आदि मुख्य बाधाएँ है, जो बालिकाओं के शिक्षा लेने के मार्ग में बाधा बन रही है। इसलिए बहुत सारी लड़कियाँ अशिक्षित रह जाती हैं। सरकार अब बालिकाओं की शिक्षा को अत्यधिक महत्व दे रही है कि बालिकाओं का शिक्षित होना समाज तथा राष्ट्र का विकास होना है। इसलिए सरकार ने बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने तथा उसे प्रोत्साहित करने हेतु प्रयास किए हैं।

मुख्य शब्द : प्राथमिक शिक्षा, बालिका अनुसूचित जाति, अभिभावकों का दृष्टिकोण, समस्याएं
Prathmaik Shiksha, Balika, Anusoochit Jati, Abhibhavakon ka Drishtikon, Samasyaen.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव की एक ऐसी मूलभूत आवश्यकता है, जो उसके बौद्धिक विकास समाज के, गाँव के, जिले के, प्रदेश के और देश के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं औद्योगिक विकास में सहायक होती है (तिवारी बरौदिया 2015)। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। लेकिन सबसे पहले बच्चा प्राथमिक स्तर के विद्यालय में प्रवेश लेता है। बच्चे के लिए यह स्तर परिवारिक माहौल से माप नहीं सकते लेकिन अलग–अलग समय इसका अच्छा–अच्छा स्वरूप देखने में आया है। भारत वर्ष में शिक्षा प्रणाली की प्रथम सीढ़ी प्राथमिक शिक्षा बच्चे की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक योग्यताओं के विकास का आधार होती है। यदि प्राथमिक शिक्षा पर पूर्ण रूप से ध्यान दिया जाए तो बच्चे की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा उच्च स्तर की शिक्षा सुचारू रूप से चलती है। प्राथमिक शिक्षा जन साधारण का महत्वपूर्ण साधन है। प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक बच्चे तक पहुँचनी आवश्यक है।

बालिका शिक्षा

प्रत्येक समाज में स्त्री के बिना किसी भी राष्ट्र के निर्माण व विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। लोकतन्त्र में बालक एवं बालिका दोनों को समान रूप शिक्षा को अधिक महत्व इसलिए दिया है, क्योंकि जिस तरह की माँ होती है, उसी तरह के संस्कार बच्चें में भी होते हैं। पुरुष अपने परिवार के जीवन–यापन के लिए घर से प्रायः बाहर रहते हैं तथा स्त्रियों का समय घर पर ही बच्चों की देख–रेख में व्यतीत होता है, जिससे माँ का उत्तरदायित्व बढ़ गया है और उत्तरदायित्व अधिक हो गये हैं, क्योंकि संयुक्त परिवार अधिकांशतः अकेले उसे परिवार के समस्त सदस्यों की देख–रेख करनी पड़ती है। घर की उचित देख–रेख तभी कर सकती हैं जब वह शिक्षित होने पर वह परिवार के

समस्त लोगों की आवश्यकताओं और परिस्थितियों को समझ कर उनका निवारण कर सकेगी।

अनुसूचित जाति के सन्दर्भ में बालिका शिक्षा

आधुनिक भारत के इतिहास में मोहनदास करमचन्द्र गाँधी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि भारतीय समाज का पुनर्निर्माण करने के लिए भेद की नीति समाप्त करनी होगी, जिन्होंने सभी लोगों से हटकर महिलाओं एवं दलितों, जिन्हें वह हरिजन कहा करते थे के उत्थान के लिए समझौताहीन संघर्ष का श्रीगणेश किया और अपने अभियान को चरम स्थिति तक पहुंचाया। परिवर्तित काल में भी एक व्यक्ति के रूप में कोई इन प्रयासों में उनके मुकाबले में नहीं ठहरता। वस्तुतः गाँधी जी ने अपने जीवन का कण हरिजन उत्थान आन्दोलन को समर्पित कर दिया था, इसकी लगन उनके दिल में अचानक ही पैदा नहीं हुयी, बल्कि बचपन से ही उनमें स्थापित सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के बीज रूप में पनप चुका था। अनुसूचित जातियों की बड़ी दैनीय अवस्था, इनकी अनेक नियोग्यताएँ थीं। यह किसी को छू नहीं सकते, समीप नहीं आ सकते, सवर्णों की बस्ती में प्रवेश नहीं कर सकते तथा अच्छे मकान नहीं बनवा सकते थे। गाँव में ये प्रायः भूमिहीन श्रृमिक हैं।

बालिका शिक्षा का महत्व

शिक्षा में बहुत सारे फायदे शामिल होते है (तिवारी, भदौरिया, सिंह – 2015) एक तो पढ़ी–लिखी और बड़ी हो चुकी लड़की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। एक शिक्षित लड़की पुरुषों के भार एवं बोझ की विभिन्न क्षेत्रों में साझा कर सकती हैं। एक कम पढ़ी–लिखी लड़की जिसे कम उम्र में शादी करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है वह लेखक, शिक्षक, वकील, डाक्टर और वैज्ञानिक के रूप में काम कर सकती हैं। वह अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं। वर्तमान समय में लड़कियों में शिक्षा एक वरदान है।

आज के समय में एक मध्यम वर्गीय परिवार में दोनों सिरों का मिलना वाकई मुश्किल है। शादी के बाद एक शिक्षित लड़की काम कर सकती है और परिवार के खर्चों को वहन करने में अपने पति की मदद कर सकती है।

इसी पृष्ठभूमि के अन्तर्गत प्रस्तुत शोध–पत्र ग्रामीण उत्तर प्रदेश में बालिका शिक्षा की प्रस्थिति का अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन एक गाँव की अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शैक्षिक प्रस्थिति को उजागर करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा की प्रस्थिति को जानना।
2. बालिका शिक्षा में बाधक कारकों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक स्तर (1 से 5) पर अध्ययनरत 60 बालिकाओं पर किया गया है साथ ही उनके अभिभावकों को भी अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य केवल बाराबंकी (देहात) के जैतपुर गाँव पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग अभिभावकों एवं बालिकाओं को चुनने के लिए किया गया है।

साहित्यावलोकन

मण्डल जी.एल. (1980) बिहार में सार्वभौमिक निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा (1950–74) तक की समस्याएँ एवं उपायों का अध्ययन किया। इस अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 5 तक) अर्थात् 8–11 वर्ष के बच्चों के विद्यालय 96 प्रतिशत बच्चों को उपलब्ध थे। विद्यालय जाने वाली जनसंख्या का 3/4 भाग जो 11 से 14 वर्ष के बच्चे हैं। इसके लिए मिडिल स्कूल (कक्षा 6 से 8) पैदल सैर की, दूरी के अन्तर्गत उपलब्ध थे कक्षा 1 में नामांकित प्रति 1000 बच्चों में केवल 250 बच्चे कक्षा–5 में पहुँचे और केवल 15 बच्चे कक्षा–8 में पहुँचे।

झा.एम.एस. (1983) ने मुम्बई की मलिन एवं अनुसूचित जाति की बस्तियों का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने मुख्य रूप से मलिन बस्तियों के विकास से सम्बन्धित समस्याओं का तथा शैक्षिक विकास के कार्यक्रमों में यहाँ के निवासी कितना सहयोग प्रदान करते हैं तथा विकास सहयोग प्रदान करते हैं तथा विकास की ओर इनका कितना रुझान है ? उन्होंने पाया कि शिक्षा तथा विकास की ओर यहाँ के निवासियों का दृष्टिकोण सकारात्मक है और 96 प्रतिशत निवासियों ने यह माना कि शिक्षा लड़के एवं लड़कियों दोनों के लिए आवश्यक है। 60 प्रतिशत मलिन बस्तियों के निवासियों ने यह माना कि शिक्षा लड़के की दहेज प्रथा नहीं होनी चाहिए। इसके विपरीत पुरुषों और स्त्रियों में कामकाज के प्रति अत्यधिक परम्परागत दृष्टिकोण आया, जिसमें कि 82 प्रतिशत यह मत पाया गया है कि स्त्रियों को घर काम–काज तथा देखभाल करनी चाहिए पुरुषों को नहीं।

कक्कर एस0बी0 (1990) ने अनुसूचित जाति के बच्चों के व्यक्तिगत की विशेषताओं का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में वो सभी व्यक्तिगत सम्बन्धी गुण हैं। जो कि जीवन में सफलता के लिए आवश्यक हैं। शोधकर्ता ने सुझाव दिया कि अनुसूचित जाति के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं को कम करने के लिए विद्यार्थियों की विशेष समस्याओं को अच्छी तरह से समझ सकें।

मिश्रा, सुबोध चन्द्र (1991) ने अनुसूचित जाति के छात्रों की शिक्षा और सामाजिक स्तर के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन किया। इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि अनुसूचित जाति के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर को कौन–कौन से

तत्व प्रभावित करते हैं। शोधकर्ता ने पाया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आकाँक्षा स्तर सीमित है तथा निर्धनता निम्न आकाँक्षा स्तर और व्यवसाय अनुरक्षा के कारण यह विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के प्रति प्रोत्साहित नहीं होते हैं।

मोयम्मा, बी.जी. (1991) ने अनुसूचित जाति के छात्रों का प्राथमिक स्तर पर अपव्यय के कारणों का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने 260 ड्राप आउट और 200 रिपोर्टर कक्षा में फेल हो जाने के बाद पुनः प्रवेश वाले विद्यार्थियों का अध्ययन किया। आँकड़ों का एकत्रीकरण प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के आधार पर किया गया। शोधकर्ता ने पाया कि अन्य समुदायों के विद्यार्थियों की तुलना अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का नामांकन कम था। ड्राप आउट और रिपीटर प्रतिशत काफी उच्च था।

कामहली पी.आर. (1992) ने अनुसूचित जाति के प्राथमिक स्कूलों के छात्रों को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का अलोचात्मक अध्ययन किया। यह अध्ययन महाराष्ट्र के देवगढ़ तालुका के विशेष सन्दर्भ में किया गया है। शोधकर्ता ने देवगढ़ तालुका के प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों पर यह अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं से लाभान्वित होकर पिछड़ी जातियों के विद्यार्थियों की उपस्थिति तथा उत्तीर्ण होने का प्रतिशत बढ़ा है। साथ ही साथ ड्राप आउट रेट घटा है।

महस्कर, बी0एन0 (2003) ने सर्वे ऑफ द इन्स्टीट्यूशन ऑफ हॉमलेस चिल्ड्रेन इन महाराष्ट्र स्टेट पर शोध कार्य किया। इन्होंने अनाथ बच्चों के शिक्षा के विभिन्न संस्थाओं की प्रवेश प्रक्रिया, आर्थिक स्थिति, संस्था कर्मचारी संगठन का अध्ययन किया ये संस्थाएँ जातीय भेदभाव के बिना इन घर विहीन बच्चों को आधार विहीन व्यवस्थाएँ महत्वूपर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मिश्रा, रंजना (2004) ने ''बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा सार्वभौमीकरण'' विषय पर एक शोध किया। उन्होंने प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में बालिकाओं का नामांकन अनुपस्थिति अपव्यय या अनुरोधन के विषयों का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार बालिकाओं का नामांकन, उनकी उपस्थिति बहुत अधिक है। धनाभाव, विद्यालय की दूरी, घर के कार्यों व अभिभावकों की उदासीनता के कारण अपव्यय व अवरोधन में अधिकता है।

पाठक वीरेन्द्र (2006) ने सामाज कल्याण पत्रिका के अगस्त 2006 के अंक में ''बालिका शिक्षा का महत्व'' के लेख में प्रस्तुत किया कि जीविकोपार्जन की योग्यता पैदा कर शिक्षा स्त्रियों का समुदाय में स्थान ऊँचा करती है और परिवार व समुदाय में निर्माण करने का अधिकार दिलाने का कार्य करती है।

मिश्रा और नायक (2010) मिश्रा और नायक का अध्ययन इस बात पर केन्द्रित था कि शिक्षा मानव विकास में केन्द्रीय भूमिका कैसे निभाती है ? इस तथ्य के रूप में अन्य दो घटक स्वास्थ्य और आय शैक्षिक विकास पर निर्भर हैं। शिक्षा व्यक्ति को पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान प्राप्त करने की अनुमति देता है। यह अधिक स्वीकार्य और उत्पादक बनाता है। शिक्षा से फिटनेस और रोजगार की सम्भावना बढ़ जाती है। अर्थशास्त्रियों ने पाया है कि उत्पादकता में वृद्धि का एक बढ़ा हिस्सा लोगों की शिक्षा के लिए जिम्मेदार है। कौशल निर्माण बालिका शिक्षा पर जोर दिया गया है। विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा एक आवश्यक है। शिक्षा महिलाओं के आगे बढ़ने में काफी हद तक मददगार है।

सिंह, सूर्यभान (2011) ने समाज कल्याण पत्रिका के फरवरी 2011 के अंक में ''बाल विकास को चाहिए दृढ़ इच्छा शक्ति'' के लेख में प्रस्तुत किया आज के बच्चे कल के भारत का भविष्य हैं। इस युक्ति को सही मान लिया जाए तो आने वाले कल के भारत के तस्वीर का हर एक पक्ष अत्यन्त कष्टदायक है और अंधकार भरा है। अनेक नीतियाँ, योजनाएँ, कार्यक्रम समय–समय पर बनाए गए, परन्तु आज आवश्यकता है सामाजिक व मानसिक परिवर्तन की और इसका एकमात्र साधन शिक्षा का प्रसार है।

दास आर.सी. (2013) असम में प्राथमिक स्तर के विशेष सन्दर्भ में शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर अपव्यय तथा अवरोधन का अध्ययन किया। इस अध्ययन में देखा गया कि प्राथमिक स्तर पर अपव्यय की दरें बहुत उच्च थीं। प्राथमिक स्तर पर लड़कों की तुलना में लड़कियों में अपव्यय की दर बहुत अधिक थी, जो 80.5 प्रतिशत और 86.31 प्रतिशत के बीच थी।

मण्डल जी.एल. (2014) बिहार में सार्वभौमिक निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा (1950–74) तक की समस्याएँ एवं उपायों से ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालय (कक्षा–1 से 5 तक) अर्थात् 6–11 वर्ष के बच्चों के विद्यालय 90 प्रतिशत बच्चों को उपलब्ध थे। विद्यालय जाने वाली जनसंख्या का 3.4 भाग जो 11 से 14 वर्ष के बच्चें हैं इनके लिए मिडिल स्कूल (कक्षा–6 से 8) पैदल सैर की दूरी के अन्तर्गत उपलब्ध थे। कक्षा–1 में नामांकित प्रति 100 बच्चों में केवल 25 बच्चे कक्षा–5 में पहुँचे और केवल 15 बच्चे कक्षा–8 में पहुँचे

झा, एस.एम. (2015) ने बम्बई की मलिन एवं अनुसूचित जाति की बस्तियों में का अध्ययन किया – शोधकर्ता ने मुख्य रूप से मलिन बस्तियों के विकास से सम्बन्धित समस्याओं का तथा शैक्षिक विकास कार्यों का अध्ययन किया। साथ ही शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि इन विकास कार्यक्रमों में यहाँ के निवासी कितना सहयोग प्रदान करते हैं तथा विकास की ओर इनका कितना रुझान है। इन्होंने पाया कि शिक्षा तथा विकास की यहाँ के निवासियों का दृष्टिकोण सकारात्मक है और 96 प्रतिशत निवासियों ने यह माना कि शिक्षा लड़के एवं लड़कियों दोनों के लिए आवश्यक है।

सिंधी एन.के. (2018) ''राजस्थान के विद्यालयों के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' किया।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका – क्रमांक 1.1
बाराबंकी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण

क्र0सं0	बालिका शिक्षा के क्षेत्र	अभिभावकों का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	विद्यालयी शिक्षा	95%
2	गृहस्थी सम्बन्धी शिक्षा	78%
3	सामाजिक आदर्श सम्बन्धी शिक्षा	71%
4	रोज़गारोन्मुख शिक्षा	85%

उपर्युक्त आँकड़ों के अनुसार बालिकाओं को विद्यालयी शिक्षा दिलाए जाने के प्रति दृष्टिकोण पर 95 प्रतिशत अभिभावकों का है। अर्थात अधिकॉश अभिभावक बालिकाओं को प्राथमिक स्तर तक अवश्य पढ़ाना चाहते हैं एवं 78 प्रतिशत अभिभावक बालिकाओं को गृहस्थी सम्बन्धी शिक्षा, जिससे वह गृह सम्बन्धी कार्य सुचारू रूप से कर सकें दिलाने के पक्ष में हैं। सामाजिक आदर्शो की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण 71 प्रतिशत है लेकिन रोज़गार सम्बन्धी शिक्षा के प्रति 85 प्रतिशत अभिभावक सहमत हैं और विद्यालयी शिक्षा के प्रति अभिभावक का दृष्टिकोण 95 प्रतिशत है।

तालिका – क्रमांक 1.2
अभिभावकों के अनुसार बालिका शिक्षा में आने वाली समस्याएँ

क्र0सं0	समस्याएँ	अभिभावकों के विचार (प्रतिशत में)
1	निर्धनता /धनाभाव	27%
2	विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं का अभाव	42%
3	विद्यालयों में अच्छी पढ़ाई न होना	38%
4	महिला शिक्षिकाओं की कमी	24%
5	घर से विद्यालय की अधिक दूरी	28%
6	घरेलू कार्यों में सहयोग	14%
7	छोटे भाई–बहिनों की देखभाल में व्यस्तता	25%
8	लड़कियों की विद्यालयी शिक्षा को महत्व न देना	28%
9	शिक्षित लड़कियों के लिए वर समस्या	14%
10	विद्यालय में जातिगत भेदभाव	14%

उपरोक्त आँकड़ों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की समस्याओं में 27प्रतिशत अभिभावको का मानना है धनाभाव एक मुख्य समस्या है जबकि 42 प्रतिशत के अनुसार विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं का अभाव, 38 प्रतिशत के अनुसार अच्छी पढ़ाई न होना, 24 प्रतिशत के अनुसार महिला शिक्षिकाओं की कमी, 28 प्रतिशत के अनुसार घर से विद्यालय की अधिक दूरी बालिका शिक्षा को बाधित करतीं है। इसके अतिरिक्त लडकियों के शिक्षा को महत्व न देना (28 प्रतिशत), छोटे भाई–बहिनों की देखभाल में व्यस्तता (25 प्रतिशत) एवं अन्य घरेलू कार्यो में सहयोग (14 प्रतिशत) जैसे समस्याएँ भी बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है। 14 प्रतिशत अभिभावको का मनना है कि शिक्षित लड़कियों के लिए वर समस्या भी बालिकाओ को पढ़ाने के उन्हें हतोत्साहित करती है।

तालिका – क्रमांक 1.3
विद्यालय की दशा

क्र0सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	भवन	पक्का	70%
		टीन शेड	30%
2	भवन की सफाई	प्रतिदिन	20%
		साप्ताहिक	30%
		मासिक	50%
3	उपकरण	श्याम पट	95%
		मेज कुर्सी	75%
		टाट पट्टी	25%
4	सुविधाएँ	पानी	80%
		शौचालय	18%
		खेल का मैदान	42%
5	बैठने की व्यवस्था	साथ–साथ	70%

		अलग–अलग	30%
6	मध्यान्ह का भोजन	फल	20%
		बिस्किट	10%
		अनाज	60%
		कुछ भी नहीं	10%
7	छात्रवृत्ति	हाँ	90%
		नहीं	10%

बालिकाओं के अनुसार विद्यालय एवं उसमें उपस्थित सुविधाओं के बारे में भी जानने का प्रयास किया गया जिसके अन्तर्गत 70 प्रतिशत बालिकाओ के अनुसार विद्यालय पक्का भवन है, 20 प्रतिशत छात्राओं ने बताया कि विद्यालय की सफाई प्रतिदिन होती है जबकि 50 प्रतिशत बालिकाओं का कहना है कि विद्यालय की सफाई मासिक होती है। विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों में श्यामपट (95 प्रतिशत), मेज–कुसी (75 प्रतिशत), टाट पट्टी (25 प्रतिशत)। विद्यालय परिसर में उपस्थित सुविधाओं में पानी की सुविधा लगभग सभी को मिल जाती है जबकि 42 प्रतिशत एवं 18 प्रतिशत बालिकाओं को ही क्रमशः खेल का मैदान व शौचालय की सुविधा मिल पाती है। 70 प्रतिशत बालिकाओं का कहना है कि वे सभी के साथ बैठतीं है, 30 प्रतिशत बालिकाओं का कहना है कि उन्हें अलग–अलग बैठाया जाता है। मध्यान्ह भोजन के बारे में ज्ञात होता है कि अधिकंश छात्राओं (60 प्रतिशत) को अनाज ही दिया जाता है। 90 प्रतिशत छात्राओं को छात्रवृत्ति मिलतीं है।

तालिका – 1.4
प्राथमिक स्तर पर उपस्थिति एवं अनुशासन

क्र0सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	विद्यालय पहुँचने का समय	समय से	60%
		देर से	20%
		आधे समय बाद	20%
2	विद्यालय पहुँचने में देर हो जाने की प्रतिक्रिया	डाँट पड़ना	75%
		कक्षा के बाहर खड़े होना	25%
3	अनुशासनहीनता पर दण्ड	डाँटकर	62%
		पिटाई करके	20%
		फाइन करके	18%
4	शिक्षकों की संख्या	एक	15%
		दो	15%
		तीन	18%
		तीन से अधिक	52%
5	प्रतिदिन शिक्षकों की उपस्थिति	एक	52%
		दो	18%
		तीन	15%
		तीन से अधिक	15%

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 2 तिहाई से भी कम (60 प्रतिशत) छात्रायें ही विद्यालय पहुँच पाती हैं जबकि 20 प्रतिशत बालिकाएँ तो आधे समय के बाद विद्यालय पहुँच पाती हैं। प्रतिदिन विद्यालय न जाने पर 75 प्रतिशत बालिकाओं को डाँट पड़ती है एवं 25 प्रतिशत को बाहर खड़ा रहना पड़ता है। अनुशासनहीनता करने पर डाँट पड़ना (62 प्रतिशत), पिटाई (20 प्रतिशत) तथा फाइन (18 प्रतिशत) का प्रावधान है। लगभग आधी बालिकाओं (52 प्रतिशत) ने बताया कि विद्यालय में तीन से अधिक अध्यापक है और प्रतिदिन शिक्षकों की उपस्थिति के बारे में अधिकांश (52 प्रतिशत) छात्राओं ने बताया कि केवल एक शिक्षक की प्रतिदिन उपस्थिति रहती है।

तालिका – 1.5
प्राथमिक स्तर पर अध्ययन की स्थिति

क्र0सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	विषयों की समझ	थोड़ी – बहुत	25%
		पूरी	10%
		आधा	40%
		बिल्कुल नहीं	25%
2	अभिभावक द्वारा घर पर पढ़ने को कहना	एक बार	42%
		बार–बार	26%
		कभी नहीं	32%
3	पठन–पाठन के	गायन	20%

	अतिरिक्त गतिविधियाँ	खेलकूद	25%
		कुछ नहीं	55%
4	घर पर पढ़ाई की अपेक्षा गृह कार्य अधिक करना व छोटे–भाई बहिनों की देखभाल करना।	हाँ	89%
		नहीं	11%

प्राथमिक स्तर पर अध्ययन की गुणवत्ता के बारे मे यह ज्ञात होता है कि आधी से भी कम बालिकाओं (40 प्रतिशत) को पढ़ाये गये विषय की आधी समझ ही हो पाती है। जबकि एक चौथाई (25 प्रतिशत) बालिकायें पढये गये विषयों को बिलकुल भी नहीं समझ पाती है। अधिकांश (42 प्रतिशत) बालिकाओं को कहना है कि उनके अभिभावक केवल एक बार घर पर पढ़ने को कहते है, जबकि लगभग एक तिहाई (32 प्रतिशत) बालिकाओं को घर पर कभी भी पढ़ने को नहीं कहा जाता है। आधे से भी अधिक (55 प्रतिशत) बलिकाओं का कहना है कि पठन–पाठन के अतिरिक्त कोई अन्य गतिविधियाँ विद्यालय मे नहीं कराई जाती है। जबकि एक चौथाई बालिकाओं का कहना है कि गायन व खेलकूद जैसी अन्य गतिविधियाँ विद्यालय में होती है। अधिकांश (89 प्रतिशत) बालिकाओं को कहना है कि उन्हें घर पर पढ़ाई की अपेक्षा गृह कार्य करना पड़ता है और साथ ही छोटे भाई–बहिनों की देखभाल करना पड़ता है।

तालिका – 1.6
प्राथमिक स्तर पर स्वाध्याय

क्र0सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	स्वाध्ययन	एक घण्टे,	15%
		एक घण्टे से अधिक	50%
		बिल्कुल नहीं	35%
2	गृह कार्य पूरा करना	प्रतिदिन	16%
		सप्ताह में	31%
		कभी–कभी	32%
		कभी नहीं	21%
3	शिक्षकों द्वारा गृह कार्य का मूल्यांकन	प्रतिदिन	20%
		कभी–कभी	18%
		कभी नहीं	62%

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर, प्राथमिक स्तर पर 15 प्रतिशत बालिकाएँ 01 घण्टे, 50 प्रतिशत एक घण्टे से अधिक स्वाध्ययन करतीं है जबकि 35 प्रतिशत बिल्कुल स्वाध्ययन नहीं करतीं। 16 प्रतिशत बालिकाएँ ही प्रतिदिन गृह कार्य करतीं है जबकि 21 प्रतिशत बालिकाएँ कभी भी गृह कार्य नहीं करती है। लगभग दो तिहाई (62 प्रतिशत) बालिकाओं का कहना है कि उनके गृह कार्य का मूल्यांकन कभी भी शिक्षको द्वारा नहीं किया जाता।

तालिका – 1.7
प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में बाधक तत्व

क्र0 सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	विद्यालय न आने के कारण	छोटे बच्चों की देखभाल करना	18%
		माता–पिता के साथ काम पर जाना	18%
		गृह कार्य करना	04%
		माता–पिता का शिक्षित न होना	60%
2	शिक्षा में बाधक तत्व	गरीबी	69%
		अकेले विद्यालय जाना	10%
		माता–पिता का शिक्षित न होना	21%
3	गृह कार्य पूरा न करने के कारण	घर पर बच्चों की देखभाल करना	38%
		विद्यालय में समझ में न आना	45%
		विद्यालय न जाना	17%

बालिकाओं के दृष्टिकोण में उनकी शिक्षा में कई बाधक तत्व है जिनका अध्ययन तीन विन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है विद्यालय में उपस्थिति, शिक्षा में बाधक तत्व, गृह कार्य पूरा न करने के कारण। विद्यालय में अनुपस्थित मे माता–पिता का शिक्षित न होना मुख्य कारण है, शिक्षा में बाधक तत्व में दो तिहाई (69 प्रतिशत) से अधिक बालिकाओं का कहना है कि गरीबी मुख्य कारण है। विद्यालय में समझ मे न आना (45 प्रतिशत) तथा घर परा बच्चों की देखभाल करना (38 प्रतिशत) बालिकाओं की दृष्टिकोण में गृह कार्य पूरा न करने के मुख्य करण है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका – 1.8
प्राथमिक स्तर परीक्षा, अध्ययन एवं कैरियर

क्र0सं0	प्रश्न बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	परीक्षा में नकल	नहीं	60%
		थोड़ी	30%
		पूर्णतः	10%
2	किस कक्षा तक पढ़ेगी?	पाँचवी	15%
		आठवीं	30%
		दसवीं	35%
		और अधिक	20%
3	शिक्षित होकर क्या बनेगी?	अध्यापिका	72%
		सम्मानित नागरिक	8%
		समाजसेविका	12%
		अन्य	8%
4	माता–पिता इच्छानुसार पढ़ायेंगे	हाँ	75%
		नहीं	25%

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि लगभग दो तिहाई बालिकाएँ (60 प्रतिशत) नकल नहीं करतीं है केवल एक तिहाई बालिकाओं का कहना है कि वे दशवीं तक पढ़ाई करेंगी और उससे अधिक पढ़ने को लेकर के 20 प्रतिशत बालिकाएँ ही सकारात्मक है। दो तिहाई (72 प्रतिशत) से बालिकाएँ अध्यापिका बनना चाहतीं है जबकि तीन चौथाई बालिकाएँ इस बात को लेकर आश्वस्त है कि उनके माता–पिता उनकी इच्छानुसार उन्हें पढ़ाएंगे।

तालिका – 1.9
जातिगत एवं लिंग भेद

क्र0सं0	प्रथम बिन्दु	उत्तर	बालिकाओं का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
1	अनुसूचित जाति होने के कारण भेदभाव	थोड़ा सा	34%
		बहुत अधिक	15%
		बिल्कुल नहीं	51%
2	माता–पिता केवल लड़कों को ही विद्यालय भेजना चाहते हैं।	हाँ	75%
		नहीं	25%
3	लड़की के समान लड़कों को घर पर काम	कुछ–कुछ	28%
		हमारी तरह	17%
		बिल्कुल नहीं	55%

बालिकाओं का कहना है कि उन्हें लिंग भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है जिसमें अनुसूचित जाति होने के कारण अधिकांशतः उन्हें जातिगत भेदभाव नहीं करना पड़ता है जबकि तीन चौथाई (75 प्रतिशत) बालिकाओं का मानना है कि माता–पिता केवल लड़को को विद्यालय भेजना चाहते है। लगभग आधी बालिकाओं लगभग 55 प्रतिशत का मानना है कि लड़को को लड़कियों के समान घर पर कार्य बिलकुल भी नही करना पड़ता है।

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर प्राथमिक स्तर पर जातिगत एवं भेदभाव के अनुसार 28 प्रतिशत लड़कों को लड़की के समान घर पर कार्य कुछ–कुछ करने पड़ते हैं। दोनों का समान कार्य करने का प्रतिशत यानी बिल्कुल नहीं 55 प्रतिशत है। तथा हमारी तरह 17 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति होने के कारण भेदभाव थोड़ा सा 20 प्रतिशत है। बहुत अधिक 92 प्रतिशत तथा 28 प्रतिशत बिल्कुल नहीं है। माता–पिता केवल लड़कों को ही विद्यालय भेजना चाहते हैं में 75 प्रतिशत हैं। और 25 प्रतिशत न हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण पर अभिभावकों एवं बालिकाओं का बालिका शिक्षा के प्रति निम्नलिखित दृष्टिकोण परिलक्षित होता है–

1. बालिका शिक्षा के सभी क्षेत्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। विद्यालयी शिक्षा गृह सम्बन्धी शिक्षा, समाजिक शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण उच्च स्तर पर सकारात्मक है।
2. प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा में निम्न समस्याओं को स्वीकार किया, जैसे – निर्धनता, शिक्षित लड़कियों के लिए वर की समस्या, घरेलू कार्यों में माता–पिता का सहयोग देना, विद्यालय में समुचित पढ़ाई न होना और विद्यालय में जाति सम्बन्धी भेदभाव, समुचित सुविधाओं का अभाव और सबसे मुख्य समस्या गाँव में विद्यालय का न होना, और महिला शिक्षिकाओं का अभाव इत्यादि।
3. अधिकाँश बालिकाओं ने स्वीकार किया कि घर के कार्यों के कारण उनकी पढ़ाई बाधित होती है। साथ ही गरीबी, प्रेरणा का अभाव, माता–पिता का शिक्षित न होना भी बाधक तत्वों के रूप में सामने आया है। अधिकाँश बालिकाओं का मत है कि अधिकाँश माता–पिता केवल लड़कों को ही विद्यालय भेजना चाहते हैं।
4. अधिकाँश विद्यालयों में शिक्षक स्कूल में आकर बैठे रहते हैं। स्कूल का कार्य नहीं करते हैं।
5. प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में बालिकाओं को समय से आने, अनुशासन कायम रखने एवं गृह कार्य की जाँच तथा मध्यान्ह भोजन के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया पाया गया है।

6. इन समस्याओं का सामना करने के उपरान्त भी अधिकाँश छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखती हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सिंह, श्वेता (2016), बालिका शिक्षा का महत्व एवं अनुसूचित जाति के सन्दर्भ में बालिका शिक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फार्मेशन मूवमेन्ट, अंक–I, जुलाई, एन.के. पब्लिशिंग.*
2. *तिवारी, अर्पणा; बरौदिया; सिंह, परमानन्द; सौरवीर (2015), प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति का अध्ययन, भारतीय भाषा, शिक्षा एवं साहित्य, अंक 6(8).*
3. *यादव, नरेन्द्र कुमार सिंह (2013), अनुसूचित जाति के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थितिः एक अध्ययन, शिक्षा संस्थान, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश.*
4. *Jha, SM (1983). Relocation and Improvement of Slums in Metropolis: A Study in Bombay, Department of Sociology, University of Bombay.*
5. *Mandal, G.L. (1980). D Litt Thesis, Education, Bihar University.*
6. *Kakkar, SB (1990), The Personality Characterstics and Educational Problems of Scheduled Caste Students: A Pilot Study, Punjab University. Fifth Survey of Educational Research, Vol (1)*
7. *Mishra Subodh Chandra (1991), A Study of relationship between education and social status of Scheduled Caste students of Cuttack District, Orisaa, Fifth Survey of Educational Research, Volume 1*
8. *Moneyamma, V.G. (1991), A Study of Causes and Correlates of wastage among scheduled caste pupils at the primary stage, Survey of Educational Research, Education of the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Minorities, Volume 1 .*
9. *Kamble P.R. (1992). A Critical study of effects of facilities given by the government to the backward class pupils in primary school in Devgad Taluka, Maharastra. Adarsh Comprehensive College of Education and Research, Pune.*
10. *17– मिश्रा, रंजना (2004). बामिकाओं की प्राथमिक शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के सन्दर्भ में एक अध्ययन, पीएचडी थीसिस, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी.*
11. *पाठक, वीरेन्द्र (२००६). बालिका शिक्षा का महत्व, समाज कल्याण पत्रिका, अगस्त।*
12. *Mishra, S.K. and P. Nayak (2010): "Facets and Factors of Human Development in Tripura" in P.*
13. *Nayak (ed.) Growth and Human Development in North-East India, Oxford University Press, New Delhi, pp.281-296.*
14. *सिंह, सूर्यभान (2011).बाल विकास को चाहिए दृढ़ इच्छशक्ति, समाज कल्याण पत्रिका, फरवरी*